

आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 3 February, 2022

Website: www.shivbabas.org

धारणा - मन बुद्धि को एकाग्र करने की युक्ति

मनुष्य यदि सुख शान्ति चाहता है, यदि वह चाहता है कि उसे सदा सफलता प्राप्त हो, यदि उसे इच्छा है कि वह सर्व सिद्धियों का मालिक बन जाये तो उसे मन और बुद्धि को एकाग्र करना होगा।

बहुत भटक चुकी है मनुष्य की मन और बुद्धि, बुद्धि तो इसलिए भटक गई है क्योंकि उसमें मनुष्य ने अन्य सभी चीजें, गंदगी, व्यर्थ बहुत भर लिया है।

और मन तो बहुत निगेटिव हो गया है। मन तो न जाने क्या क्या सोचता है। मन को मनोविकारों के वश करके मनुष्य तो मन को बहुत भटका दिया है। इसलिए वह अशान्ति पैदा कर रहा है। मनुष्य को दुःख दे रहा है। उसे परेशानियों में डाल रहा है। हमें ज्यों की राजयोग के मार्ग पर चल रहे है, एकाग्रचित होकर बाबा से सर्वस्व प्राप्त कर लेना है।

जितने हम उसके स्वरूप पर एकाग्र होंगे उतनी ही हमें सुन्दर अनुभूतियाँ होगी। प्राप्तियाँ होंगी। जितनी हमारे अंदर एकाग्रता होगी, बाबा से उतनी ही हमें वरदान मिल जायेंगे। और सुख शान्ति तो बहुत ज्यादा अनुभव होने लगेगी।

इसलिए बुद्धिमान मनुष्य को अब चाहिए कि वह अपने मन को अपने बुद्धि को भटकाये नहीं। बुद्धि को इतना स्वच्छ करे कि उसमें भगवान बैठ सके। बुद्धि को इतना पावरफूल करे कि उसमें वरदान ठहर सके।

बुद्धि को इतना ईश्वरीय नशे में रखे कि किसी गंदगी को उसमें प्रवेश करने का साहस ही न रहे। हमें एकाग्रचित अवश्य होना है। विना एकाग्रता के तो हमारे विकर्म भी विनाश नहीं होंगे।

हमें शक्तियाँ मिलती ही है एकाग्रता से। और जितना जितना हम स्वयं को एकाग्रचित करते जाते है उतना ही हम स्वयं को जानते जाते है।

हमें अपना स्वरूप, अपना भविष्य, अपना पुज्य स्वरूप, अपने चुराशी जन्मों का स्पष्ट ज्ञान होता जाता है।

तो आइये हम इन महान उपलब्धियों के लिए स्वयं को एकाग्र करे। मन कहाँ कहाँ भटकता है? उसकी भागदौड़ कहाँ कहाँ है? वह विकारों के पीछे, तृष्णाओं के पीछे, मनुष्य के पीछे, धन सम्पदा के पीछे, ईर्ष्या द्वेष के पीछे कहाँ भटक रहा है?

हमें पहले उसके भटकने की पहचान होनी चाहिए। उसके बीज को समझ लेना चाहिए। कि मेरा मन कहाँ भटकता है। जो सूक्ष्मदर्शी है उन्हें देख लेना चाहिए कि मेरा मन कहीं मैं पन और मेरे पन के कारण तो नहीं भटकता है?

चिन्ताओं में तो मेरा मन नहीं भटकता है? हमें बेफ़िक्र बादशाह तो बनना ही पड़ेगा। तो आइये हम एकाग्रता के शक्ति को बढ़ाकर इस संसार की महान सेवा करे।

क्योंकि आने वाले दिनों में जब इस संसार में हाहाकार होगी और बाबा की और उसके बच्चों की जयजयकार होगी, तब हमें इस सारे संसार को बहुत कुछ देना होगा।

और यदि हम एकाग्रचित होंगे तो हमें सर्व खजानों से भरपूर रहेंगे।

विनाशकाल में स्वयं को जानने के कारण हम अचल अडोल भी रहेंगे। और विनाश की घटनाओं का प्रभाव भी हम पड़ नहीं पड़ेगा।

तो हम ध्यान दे, मन को कहीं भटकाये नहीं। यदि हम ऐसे वैसे चीजें देखते रहेंगे, मोबाइल पर ऐसे ऐसे बातें करते रहेंगे, ज्यादा बातों में रहेंगे तो हमारी मन बुद्धि बहुत भटकती रहेगी। और हमें सुख नहीं मिलेगा।

तो आज हम सारा दिन दो चीजों पर एकाग्र होंगे

पहले....

" अपने आत्मिक स्वरूप पर " ..

और

" अपने सम्पूर्ण फ़रिश्ते स्वरूप पर "

प्रति घन्टा एकबार अपने इन दोनों स्वरूप को बहुत अच्छी तरह देखेंगे। और एकाग्रता के द्वारा हमें यह ऐसे ही दिखाई देंगे जैसे सामने रखी हुई स्थूल वस्तु दिखाई देती है।

और फिर देखेंगे ऊपर

" शान्ति के सागर को "

और

" उससे शान्ति की रोशनियाँ प्राप्त करके चित्त को शान्त करेंगे "

॥ ओम शान्ति ॥

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org